8 डॉ० ए०पी०जे० अब्दुल कलाम

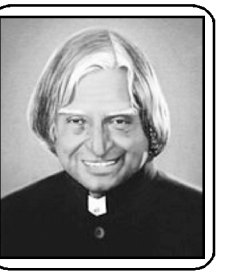

लेखक : एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1931 ई०।
- **प्रसिद्धि**—मिसाइलमैन एवं जनता के राष्ट्रपति।
- **पिता**—जैनुलाब्दीन।
- **माता**—अशिअम्मा।
- **शिक्षा :** इंजीनियरिंग।
- **लेखन विधा :** काव्य, आत्मकथा, विज्ञान।
- **भाषा :** सरल, प्रवाहमय, बोधगम्य।
- **शैली :** चिन्तनपरक, आत्मकथात्मक।
- **प्रमुख रचनाएँ**—इग्नाटिड माइंड्स : अनलीशिंग द पावर विदिन इण्डिया, माय जर्नी आदि।
- **मृत्यु**—27 जुलाई, सन् 2015 ई०।

मिसाइलमैन एवं जनता के राष्ट्रपति के रूप में प्रसिद्ध डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का पूरा नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम है। कलाम का जन्म 15 अक्टूबर, 1931 ई० को धनुषकोडी गाँव, रामेश्वरम् तमिलनाडु में हुआ था। इनके पिता जैनुलाब्दीन एक नौका मालिक एवं मछुआरे थे। इनकी माँ का नाम अशिअम्मा था। कलाम जी अपने पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटे थे।

कलाम जी के घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। इसलिए वह पढ़ाई करने के साथ-साथ काम भी करते थे। वह अपनी स्कूली शिक्षा की जरूरत पूरी करने के लिए हर दिन अखबार बेचकर पैसा कमाते थे। इन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा रामनाथपुरम के एक मैट्रीकुलेशन स्कूल से पूरी की और स्नातक की पढ़ाई सेण्ट जोसेफ कॉलेज तिरुचिरापल्ली से पूरी की। उसके बाद इन्होंने प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास से 1960 ई० में अंतरिक्ष इंजीनियरिंग की शिक्षा पूरी की। इनकी विद्वत्ता से प्रभावित होकर इन्हें 'डॉक्टर' की मानद् उपाधि दी गयी। 27 जुलाई, 2015 ई० को भारतीय प्रबंधन संस्थान शिलांग, मेघालय में एक व्याख्यान के दौरान हृदयाघात से उनकी मृत्यु हो गयी। भले ही वे आज इस संसार में नहीं हैं किन्तु उन्होंने भारत को जो सफलता और ऊँचाई दी है उसको पूरा देश ही नहीं विश्व सदा याद रखेगा।

कलाम जी अविवाहित थे। अपनी शिक्षा पूरी करने के पश्चात् रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (DRDO) से वैज्ञानिक के रूप में जुड़े। प्रारम्भ में इन्होंने छोटे हेलीकाप्टर डिजाइन करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। अंतरिक्ष अनुसंधान के लिए भारतीय राष्ट्रीय समिति का हिस्सा होने के कारण इन्हें भारत के महान् वैज्ञानिक विक्रम अम्बालाल साराभाई जैसे लोगों के साथ काम करने का मौका मिला।

1969 ई० में इन्हें भारतीय अन्तरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) भेज दिया गया जहाँ इन्होंने परियोजना निदेशक के रूप में कार्य किया। इन्होंने पहला उपग्रह प्रक्षेपण यान और ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान को बनाने में अपना विशेष योगदान दिया और यह प्रक्षेपण बाद में सफल हुआ।

1980 ई० में भारत सरकार ने एक आधुनिक मिसाइल प्रोग्राम अब्दुल कलाम के निर्देशन में शुरू करने का विचार किया और इस कार्य के लिए इन्हें दोबारा DRDO में भेजा। इसके बाद एकीकृत निर्देशित मिसाइल कार्यक्रम कलाम जी के मुख्य कार्यकारी के रूप में शुरू किया गया। अब्दुल कलाम के निर्देशन में ही अग्नि मिसाइल, पृथ्वी जैसे मिसाइल का बनना सफल हुआ। कलाम जी 2002 ई० में भारत के 11वें राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित हुए। इन्होंने दूसरी बार राष्ट्रपति का चुनाव लड़ने से मना कर दिया और 25 जुलाई, 2007 ई० को अपना राष्ट्रपति पद छोड़ दिया।

कलाम जी ने निम्नलिखित पुस्तकों की रचना की–

(i) India 2020 : A Vision for the New Millennium (1998)

(ii) Wings of Fire : An Autobiography (1999)

(iii) अग्नि की उड़ान (हिन्दी) (1999)

(iv) Ignited Minds : Unleashing the Power Within Indian (2002)

(v) आरोहण–प्रमुख स्वामी जी के साथ मेरा आध्यात्मिक सफर।

डॉ0 कलाम को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया—

- पद्म भूषण (1981)
- पद्म विभूषण (1990)
- भारत रत्न (1997)
- वान ब्राउन अवार्ड (2013)

कलाम जी के उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कलाम जी विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति थे। ये भारत के उच्चकोटि के वैज्ञानिक, लोकप्रिय राष्ट्रपति, दार्शनिक एवं समाज सेवी थे। ये मानवता के पुजारी एवं भारतीय युवाओं के हृदय सम्राट थे। कलाम जी का सम्पूर्ण जीवन पूरे विश्व के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। आज कलाम जी भले ही जीवित न हों किन्तु अपने कार्यों द्वारा सम्पूर्ण विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ गये हैं।

हम और हमारा आदर्श

(तेजस्वी मन के सम्पादित अंश)

मैं खासतौर से युवा छात्रों से ही क्यों मिलता हूँ? इस सवाल का जवाब तलाशते हुए मैं अपने छात्र जीवन के दिनों के बारे में सोचने लगा। रामेश्वरम् के द्वीप से बाहर निकलकर यह कितनी लंबी यात्रा रही। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता। आखिर वह क्या था जिसके कारण यह संभव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान् नागरिक भी कैसे बन सकेंगे।

विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है। ऐतिहासिक तथ्य बस इतना है कि इन राष्ट्रों– जिन्हें जी-8 के नाम से पुकारा जाता है– के लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस विश्वास को पुख्ता किया कि मजबूत और समृद्ध देश में उन्हें अच्छा जीवन बिताना है। तब सच्चाई उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप ढल गई।

मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है। उदाहरण के तौर पर, मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक हैं। आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि खुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती। किसी बगीचे में जाइए। मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी। अथवा ऊपर की तरफ ही देखें, यह ब्रह्माण्ड आपके अनंत तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे।

जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है। जैसा कि महर्षि अरविंद ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं। इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है।

इसके बावजूद अकसर हमें यही विश्वास दिलाया जाता है। न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी निश्चित रूप से कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसंद पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिए है क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं। लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर–जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना-अलग बातें हैं। हमारी युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है। उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर उस स्वर्णिम युग के लिए काम करना सही है। आप जो कुछ भी करें वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कर सकेंगे।

शब्दार्थ

खासतौर से = विशेष रूप से। **तलाशते हुए** = ढूँढ़ते हुए। **दिमाग** = मस्तिष्क। **आँका** = जाँचा-परखा। **हक** = अधिकार। **समृद्धि** = सम्पन्नता। **न्यूनतम** = कम से कम। **आधे-अधूरे मन से** = बेमन से। **सर्वत्र** = सब जगह। **कद्र करना** = सम्मान

करना। **आजादी** = स्वतन्त्रता। **यकीन** = विश्वास। **ऊर्जा** = शक्ति। **अंश** = भाग। **एहसास** = महसूस। **हर्ज** = परेशानी। **प्रसार** = विस्तार। **महत्वाकांक्षा** = उन्नति को प्राप्त करने की इच्छा। **मुताबिक** = अनुसार। **बुनियादी** = प्रारंभिक, आधार स्वरूप। **जिम्मेदार** = अपने दायित्व को निभाने वाला। **तादात्म्य** = अभिन्नता। **एहसास** = ध्यान, अनुभव। **अभिव्यक्ति** = प्रकट। **खासतौर** = विशेष रूप से। **ख्याल** = विचार। **तथ्य** = वास्तविकता। **पुख्ता** = दृढ़, मजबूत। **अध्यात्म** = आत्मा-परमात्मा सम्बन्धी ज्ञान। **सर्वत्र** = सब जगह। **अनन्त** = जिसका अन्त न हो। **गुजारा करना** = जीवन-निर्वाह करना। **जीवन-शैली** = जीवन जीने का ढंग। **तमाम** = समस्त। **सम्पर्क कायम करना** = संपर्क स्थापित करना। **फैसला** = निर्णय।

अभ्यास प्रश्न

गद्यांश पर आधारित *प्रश्न*

1. निम्नलिखित गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

(क) मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है। उदाहरण के तौर पर, मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ, लेकिन मैं सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ, क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है, जो अंततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक हैं। आप अपने आस-पास देखेंगे तो पाएँगे कि खुद प्रकृति भी कोई काम आधे-अधूरे मन से नहीं करती। किसी बगीचे में जाइए। मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी। अथवा ऊपर की तरफ ही देखें, यह ब्रह्माण्ड आपके अनंत तक फैला दिखाई देगा, आपके यकीन से भी परे। **[2019 CO, CS]**

प्रश्न– (i) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

(ii) लेखक समृद्धि और अध्यात्म को आपस में विरोधी क्यों नहीं मानता?

(iii) समृद्धि से हमें क्या लाभ मिलता है?

(iv) प्रकृति का कोई काम पूर्ण मनोयोग से होता है; इसका आशय स्पष्ट कीजिए।

(v) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(vi) 'न्यूनतम' और 'अनन्त' का क्या अर्थ है?

(ख) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है। जैसा कि महर्षि अरविंद ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं। इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं, वे एक-दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या गैर-आध्यात्मिक बात नहीं है। **[2020 ZF, ZN]**

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

(ii) लेखक ने अस्तित्व का हिस्सा किसे माना है?

(iii) प्रस्तुत गद्यांश का क्या प्रसंग है?

(iv) प्रस्तुत गद्यांश लेखक के किस सम्पादित पुस्तक का अंश है?

(v) गद्यांश के रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(vi) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह किसका स्वरूप है?

(vii) महर्षि अरविन्द ने अस्तित्व का हिस्सा किसको माना है?

(viii) गद्यांश के आधार पर तादात्म्य का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ix) कैसी इच्छा रखना शर्मनाक या और आध्यात्मिक बात नहीं है?

(x) महर्षि अरविन्द ने क्या कहा?

(xi) हम इस संसार में जो कुछ देखते हैं वह क्या है?

(xii) अस्तित्व और तादात्म्य शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ग) न्यूनतम में गुजारा करने और जीवन बिताने में भी निश्चित रूप से कोई हर्ज नहीं है। महात्मा गाँधी ने ऐसा ही जीवन जिया था, लेकिन जैसा कि उनके साथ था, आपके मामले में भी यह आपकी पसन्द पर निर्भर करता है। आपकी ऐसी जीवन-शैली इसलिए है, क्योंकि इससे वे तमाम जरूरतें पूरी होती हैं, जो आपके भीतर की गहराइयों से उपजी होती हैं, लेकिन त्याग की प्रतिमूर्ति बनना और जोर-जबरदस्ती से चुनना-सहने का गुणगान करना अलग बातें हैं।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ एवं लेखक का नाम लिखिए।

अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) मनुष्य को सदैव किस प्रकार की जीवन-शैली अपनानी चाहिए?

(iv) लेखक महात्मा गाँधी के जीवन का उदाहरण देकर क्या स्पष्ट करना चाहता है?

(v) लेखक के अनुसार किस प्रकार का जीवन व्यतीत करने में परेशानी नहीं है?

(घ) विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है। ऐतिहासिक तथ्य बस इतना है कि इन राष्ट्रों–जिन्हें जी-8 के नाम से पुकारा जाता है–के लोगों ने पीढ़ी-दर-पीढ़ी इस विश्वास को पुख्ता किया कि मजबूत और समृद्ध देश में उन्हें अच्छा जीवन बिताना है। तब सच्चाई उनकी आकांक्षाओं के अनुरूप ढल गयी।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) जी-8 के देशों के लोगों ने किस विश्वास को मजबूत किया।

(iv) जी-8 के नाम से किसे पुकारा जाता है?

(v) किसकी समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है?

(ङ) हमारी युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के मेरे फैसले का आधार भी यही रहा है। उनके सपनों को जानना और उन्हें बताना कि अच्छे, भरे-पूरे और सुख-सुविधाओं से पूर्ण जीवन के सपने देखना तथा फिर उस स्वर्णिम युग के लिए काम करना सही है। आप जो कुछ भी करें वह आपके हृदय से किया गया हो, अपनी आत्मा को अभिव्यक्ति दें और इस तरह आप अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कर सकेंगे।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) हम अपने आस-पास प्यार तथा खुशियों का प्रसार कब कर सकेंगे?

(iv) स्वर्णिम युग के लिए कार्य करना कब सही है?

(v) लेखक का युवा शक्ति से सम्पर्क कायम करने के फैसले का आधार क्या रहा है?

(च) आखिर वह क्या था, जिसके कारण यह सम्भव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए, वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं, तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक भी कैसे बन सकेंगे।

प्रश्न– (i) उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(ii) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(iii) युवा छात्र जिम्मेदार और ज्ञानवान नागरिक कब तक नहीं बन सकेंगे?

(iv) लेखक युवा छात्रों को कौन-सी प्रमुख बात सीखने के लिए कहता है?

(v) लेखक के अनुसार विद्यार्थियों और युवाओं को किस बात पर भरोसा होना चाहिए?

(छ) मैं खासतौर से युवा छात्रों से ही क्यों मिलता हूँ? इस सवाल का जवाब तलाशते हुए मैं अपने छात्र जीवन के दिनों के बारे में सोचने लगा। रामेश्वरम् के द्वीप से बाहर निकलकर यह कितनी लंबी यात्रा रही। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता। आखिर वह क्या था जिसके कारण यह संभव हो सका? महत्त्वाकांक्षा? कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं। मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका। बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं, उनका जो ईश्वर की दी हुई हैं। जब तक हमारे विद्यार्थियों और युवाओं को यह भरोसा नहीं होगा कि वे विकसित भारत के नागरिक बनने के योग्य हैं तब तक वे जिम्मेदार और ज्ञानवान् नागरिक भी कैसे बन सकेंगे। **[2019 CT]**

(i) लेखक युवा छात्रों से ही क्यों मिलता है?

(ii) आप किन चीजों के पाने का हक रखते हैं?

(iii) उक्त पंक्तियों से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

(iv) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(v) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का संक्षिप्त जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए। **[2019 CL, CP, CR]**
2. निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का परिचय दीजिए—
   (i) जीवन-परिचय,
   (ii) प्रमुख रचनाएँ।
3. ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का साहित्यिक परिचय देते हुए उनकी कृतियों का उल्लेख कीजिए। **[2020 ZM]**
4. 'हम और हमारा आदर्श' पाठ का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
5. निम्नलिखित सूक्तियों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—
   (क) मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक-दूसरे के विरोधी हैं।
   (ख) जो कुछ भी हम इस संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डॉ० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम का देश के लिए क्या योगदान है?
2. अब्दुल कलाम की रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
3. अब्दुल कलाम का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
4. अब्दुल कलाम का निधन कब हुआ था?
5. अब्दुल कलाम के परिवार का मुख्य व्यवसाय क्या था?
6. "विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा है।" कलाम जी के कहने का क्या अभिप्राय है?
7. ऊर्जा का स्वरूप बताइए।